'वर्तमान में हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें सभ्यता की विराट भूख छिपी हुई है। यह न तो कट्टरतावाद है और न ही फासीवाद। यह एक अपवाद जैसा ऐतिहासिक क्षण है, जिसमें भारत और विदेशों में रहने वाले हिंदुओं की एक पूरी पीढ़ी जवान हो रही है और सिर्फ एक ही सवाल कर रही है: आखिर हम हैं कौन? वास्तव में हमारी पहचान क्या है?'

हिंदू धर्म

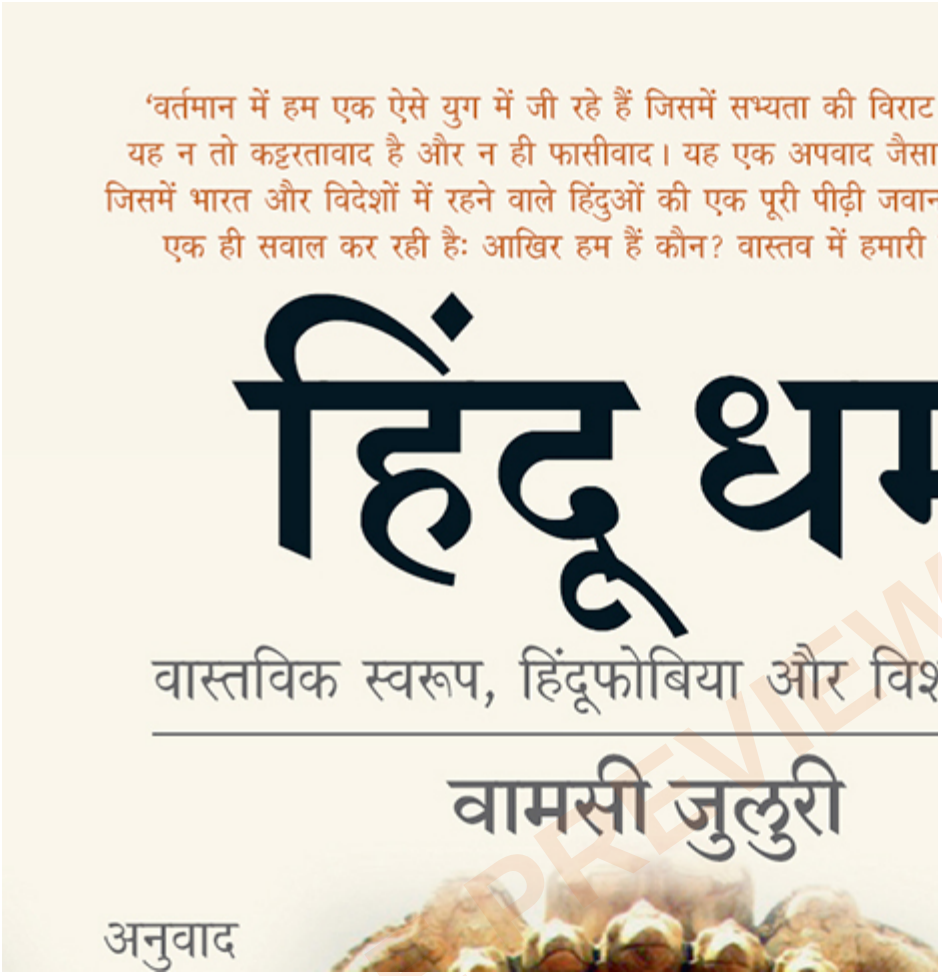
वास्तविक स्वरूप, हिंदूफोबिया और विश्व कल्याण

वामसी जुलुरी

अनुवाद
सुशांत झा



PREVIEW



SAMPLE PREVIEW

Preview ends here

239 more page(s) in the full PDF.

Buy this PDF or take a subscription on Padhai Pitara to unlock.